

---

# Vishvakarma Suktam

---

## विश्वकर्मसूक्तम्

---

### Document Information



---

Text title : Vishvakarma Suktam

File name : vishvakarmASUktam.itx

Category : veda, rigveda, sUkta, deities\_misc

Location : doc\_veda

Proofread by : NA

Description-comments : Rigveda 10.81-82 and Yajurveda 17.24, 17.32

Acknowledge-Permission: vishwakarmasamaj.com, jangidbrahminsamaj.com

Latest update : July 8, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 30, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



विश्वकर्मसूक्तम्



ऋग्वेद के दशम मण्डल के सूक्त ८१ व ८२ दोनों सूक्त विश्वकर्मा सूक्त हैं। इनमें प्रत्येक में सात-सात मन्त्र हैं। इन सब मन्त्रों के ऋषि और देवता भुवनपुत्र विश्वकर्मा ही हैं। ये ही चौदह मन्त्र यजुर्वेद अध्याय के १७वें में मन्त्र १७ से ३२ तक आते हैं, जिसमें से केवल दो मन्त्र २४वां और ३२वां अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक मांगलिक पर्व पर यज्ञ में गृह प्रवेश करते समय, किसी भी नवीन कार्य के शुभारम्भ पर, विवाह आदि सस्कारों के समय इनका पाठ अवश्य करना चाहिए।

ऋग्वेद दशम मण्डल सूक्त ८१ । १०.८१

सस्वर

य इ॒मा विश्वा॑ भु॒वनानि॑ जु॒ह्वदृषि॑र्होता न्यसीदत्पिता नः ।  
स आ॒शिषा॑ द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवराँ आ विवेश ॥ १ ॥  
किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वत्कथासीत् ।  
यतो॑ भूमिं जनयन्विश्वकर्मा विद्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः ॥ २ ॥  
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।  
सं बाहु॑भ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ ३ ॥  
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।  
मनीषि॑णो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन् ॥ ४ ॥  
या ते॑ धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा ।  
शिक्षा॑ सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः ॥ ५ ॥  
विश्वकर्म॑न्हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् ।  
मुह्यन्त्व॑न्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥ ६ ॥

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम ।  
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥ ७ ॥

ऋग्वेद दशम मण्डल सूक्त ८२ । १०.८२

चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमैने अजनन्नमाने ।  
यदेदन्ता अददहन्त पूर्वं आदिद्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥ १ ॥  
विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत संदृक् ।  
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन्पर एकमाहुः ॥ २ ॥  
यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।  
यो देवानां नामधा एक एव तं सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥ ३ ॥  
त आयजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वं जरितारो न भूना ।  
असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥ ४ ॥  
परो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति ।  
कं स्विद्गर्भं प्रथमं दध्न आपो यत्र देवाः समपश्यन्त विश्वे ॥ ५ ॥  
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्न आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे ।  
अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥ ६ ॥  
न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।  
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥ ७ ॥

ऋग्वेद दशम मण्डल सूक्त ८१ । १०.८१

स्वरविरहित -

य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदृषिर्होता न्यसीदत्पिता नः ।  
स आशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवराँ आ विवेश ॥ १ ॥  
किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्विक्त्वासीत् ।  
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा विद्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः ॥ २ ॥  
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।  
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ ३ ॥  
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।


मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन् ॥ ४ ॥  
या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा ।  
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः ॥ ५ ॥  
विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् ।  
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥ ६ ॥  
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम ।  
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥ ७ ॥  
ऋग्वेद दशम मण्डल सूक्त ८२ । १०.८२  
चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेने अजनन्नमाने ।  
यदेदन्ता अददहन्त पूर्वं आदिद्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥ १ ॥  
विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत संदृक् ।  
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन्पर एकमाहुः ॥ २ ॥  
यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।  
यो देवानां नामधा एक एव तं सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥ ३ ॥  
त आयजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वं जरितारो न भूना ।  
असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥ ४ ॥  
परो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति ।  
कं स्विद्गर्भं प्रथमं दध्न आपो यत्र देवाः समपश्यन्त विश्वे ॥ ५ ॥  
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्न आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे ।  
अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥ ६ ॥  
न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।  
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतुप उक्थशासश्चरन्ति ॥ ७ ॥  
यजुर्वेद के १७वें अध्याय में उसका २४वां महत्वपूर्ण मन्त्र  
विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् ।  
तस्मै विशः समनमन्त दैवीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥ २४ ॥  
हे विश्व के रचयिता परमेश्वर ! हवि द्वारा वृद्धि को  
प्राप्त होने वाले आपने इन्द्रदेव को विश्व का रक्षक और

अपराजेय बनाया है । पूर्वकाल के ऋषियों के तुल्य हम भी  
उन इन्द्रदेव को झुककर नमन करते हैं । ये पराक्रमी  
इन्द्रदेव आपकी शक्ति से ही सब प्रकार समर्थ हुए हैं ।  
हम उनका आवाहन करते हैं ॥ २४ ॥


यजुर्वेद के १७वें अध्याय का ३२वां महत्वपूर्ण मन्त्र  
विश्वकर्मा ह्याजनिष्ट देव । आदिद्वन्द्वर्वोऽभवद् द्वितीयः ।  
तृतीयः पिता जानितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात्पुरुत्रा ॥ ३२ ॥

सृष्टि क्रम में सर्वप्रथम ब्रह्माण्ड के संचालक  
देवगण आविर्भूत हुए, इसके पश्चात् पृथ्वी को धारण  
करने वाले (अग्नि-सूर्य) देव प्रकट हुए । तृतीय क्रम  
में ओषधियों के उत्पादक और पालक प्राण- पर्जन्य उत्पन्न  
हुए । वह (विश्वसृजेता) सभी जल के गर्भ को विविध  
रूपों में धारण करता है ॥ ३२ ॥

---

——  
*Vishvakarma Suktam*

pdf was typeset on October 30, 2024

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

